International Journal of Applied Research 2019; 5(4): 528-530

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2019; 5(4): 528-530
www.allresearchjournal.com
Received: 19-02-2019
Accepted: 27-03-2019

सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सोनू कुमार झा
ग्राम– हरिनगर, पो.– रघुनी देहट, जिला– मधुबनी, बिहार, भारत

वर्तमान संदर्भ मे 'अगिलेसुआ'

सोनू कुमार झा

प्रस्तावनाः

ठीके 'अगिलेसुआ' एकदम अगिलेसुआ अछि। हरिनंदन ठाकुर 'सरोज' बीसम शताब्दीमे अबैत छथि। मैथिली कथा सभक माध्यमे मिथिलामे व्याप्त कुरीति सभ पर प्रहार करबाक जे साधंस ओ कयलनि अछि से कोनो अगिलेसुए कऽ सकैत अछि। बीसम सदीक पूर्वार्द्धमे ककरो साहस कहाँ रहैक जे एहि सभ विषय पर किछु लिखितए। हरिनंदन ठाकुर 'सरोज' 1929 ई. मे मिथिलामे 'संतोष' कथाक संग अबैत छथि आ 'आदर'क संग 1945 ई. धरि लगातार छपैत रहैत छथि। विषय आ मुद्दा सभ ज्वलन्त छल। किछु विषय तऽ आगू धरि समकालीन अछि। हिनक समय आ हरिमोहन झाक समय करीब–करीब एकहि अछि। कहि सकैत छी जे ओ दुनू समकालीन छलाह।

ओहि समयक साहित्यकार लोकनि लग मात्रा एकेटा विषय रहनि वैवाहिक समस्या। से बाल विवाह हो, आ की बाल विधवाक दुर्दशा, बेसी गोटे एही विषय पर अपन कलम भाँजैत रहलाह। ओहि समयमे साहसक संग सरोज जी अपहरण, भ्रष्टाचार, अशिक्षा, पलायन, धार्मिक अंधविश्वास सन सन विषयक चयन कऽ कथा–लेखन कयलनि, जे आइयो प्रसांगिके अछि। बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धहिमे एतेक दृष्टि सम्पन्नता आ इएह दूरदर्शिता समकालीन साहित्यकारक मध्य सरोजक पलड़ाकेँ लऽत कऽ दैत अछि। जाहि मिथिला समाजमे लेखक द्वारा बुच्चीदाइकेँ चुप्प कएल गेल अछि, ओहिठाम सरोज अपन कथा सभमे आवाज देलनि अछि।

हरिनंदन ठाकुर 'सरोज' मात्रा पन्द्रह–सोलह वर्षक अपन साहित्यिक यात्राामे उपन्यास, नाटक, कथा, आलोचना आदि गद्यक सभ विधामे लेखनी चलौलनि। दैव संयोग जे मैथिलीक 'सरोज' पूर्ण प्रस्फुटित होएबासँ पहिनहि (मात्रा सैंतिस वर्षक अवस्थामे) काल–कवलित भऽ गेल। एहिठाम हम हुनक कथा सभ पर मात्रा विचार करब। विभिन्न पत्रा–पत्रिकामे छिड़िआएल आ विभिन्न श्रोतसँ अड़तीसटा कथाकेँ समेटिकऽ डॉ. रमानन्द झा 'रमण' एकठाम कऽ 'अगिलेसुआ' नामसँ संग्रह प्रकाशित करबौलनि।

हमरा सभकेँ ज्ञात अछि जे उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध एवं बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धमे मिथिलामे जे सभसँ पैघ समस्या छल बाल–विवाह, बहु विवाह, अनमेल विवाह, विधवाक समस्या। ई सभ मिलिकऽ जे तत्कालीन मिथिलाक चित्रा गढ़ैत अछि ओ आइयो कारुणिक दृश्य उत्पन्न करैत अछि। एहि सभ विषय पर हरिनंदन ठाकुर 'सरोज' गम्भीरतापूर्वक लेखन कयलनि अछि, जेना 'वैधव्य जीवन' आ 'अंतर्वेदना' कथा अछि। बेटी कोन तरहेँ लोकक कंठ पर ठेकल रहैत छल से वैधव्य जीवनक एहि वाक्यसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि

सदाशिव 'आइ मोकदमाक तारिख थिकैक, कचहरी जयबाक अछि।'

आवेशरानी 'जन्म भरि मोकदमे लड़ैत रहब, की बेटीक बियाहो कराएब! सब कौचर्य करैत अछि।' [1]

समाजमे विधवाक स्थिति केहन छल से मालतीक एहि वाक्यसँ बूझल जा सकैत अछि

'आइ प्रियतमक परोक्ष भेने समाजमे हमरा हेतु कोनो स्थान नहि, हा! वैधव्य जीवन सन भारी, कष्टकर जीवन कोनो नहि होइछ।' [2]

एहि कथामे माधवीक विवाहमे ओकर पिता जी खोलिकऽ खर्च करैत छथि, मुदा दैव संयोग जे जखन ओ विधवा भऽ जाइत अछि तखन वएह बेटी हुनका लेल अशुभ भऽ जाइत छनि। बेटा मुड़नमे जखन छागर परीक्षा नहि लैत छनि तऽ ओकर कारण हुनका अपन बाल–विधवा बेटी माधवी बुझाइत छनि, जे हुनक एहि वाक्यसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि 'माधवी चुपचाप केबाड़क कोनमे बैसल रहथि। सदाशिव बाबू माधवी लग आबि कहलथिन 'माधवी, एहिठामसँ कने बाहर दोसर घरमे जा तऽ, पूजाक बाद फेर अबिहऽ। जाह, ताबत पान लगाबह गऽ।' [3]

एहि अपमानकेँ माधवी बर्दास्त नहि कऽ पबैत अछि आ विष खा लैत अछि। मुदा ओ कहैत अछि जे आत्महत्या तऽ बड़का पाप थिक! एक जन्मक तऽ ई फल, जानि नहि जे फेर दोसर जन्म की हैत। ई जनितो जे आत्महत्या करब पाप थिक, तैयो समाजक व्यवहारसँ तंग आबि ओ करैत अछि। विष खेबा काल ओ कहैत अछि 'एकर भागी हम नहि, हमर समाज।' [4]

तहिना 'अंतर्वेदना' कथामे जयन्ती जे मात्रा सत्राह वर्षक अवस्थामे विधवा भऽ जाइत अछि ओकरा प्रति समाजक ठेकेदार लोकनिक जे दुर्व्यवहार छल से स्पष्ट अछि। जखन जयन्ती दुर्गास्थान पूजा करबाक लेल जाइत अछि, संयोग तखने बलिप्रदानक समय भऽ जाइत छैक। कोनो कारणे छागर परीक्षा नहि लैत अछि, तकर दोष ओतऽ ठाढ़ ओहि अवला बाल विधवा 'जयन्ती' पर थोपल जाइत अछि। ओतऽ कातमे ठाढ़ जयन्ती पर सुन्दर बाबू थानाक दरोगा जकाँ गरजैत बजला 'तोँ एखन एहिठामसँ हटि जाह!' [5]

ई अपमान ओ बर्दास्त नहि कऽ सकल आ तहिया जे ओ प्रश्न पुछलनि तकर उत्तर आइ धरि समाज की दऽ सकल अछि? ओ कहैत अछि 'की, पति बिना पत्नीक जीवन नहि कटि सकैछ? विधवाक प्रति समाजक आवरण किएक कठोर भेल जा रहल अछि!' [6] जयन्ती द्वारा कएल गेल आत्महत्या, आत्महत्या नहि, समाज द्वारा कएल गेल हत्या अछि। एहि दुनू कथाकेँ पढ़बा काल बाबा यात्रीक 'बूढ़ बर' आ 'विलाप' कविताक मर्म मोन पड़ैत अछि। ओना एहि दुनू कथामे कथा नायिका द्वारा आत्महत्या करब, कथाकेँ कमजोर करैत अछि, मुदा तत्कालीन मिथिला समाज ततेक आदर्शवादी छल जे दुनू समाजसँ संघर्ष नहि कऽ सकैत छलि। एहि आदर्शवादितासँ कथाकार कोना वंचित रहि सकितथि। तहिना तत्कालीन समाजमे स्त्री शिक्षाक घोर अभाव छल, जाहिसँ समाजमे कतेको तरहक संकट उत्पन्न होइत छल। नीक–नीक लड़कीकेँ अशिक्षिता होएबाक कारणे ओकर पति ओकरा छोड़ि दैत छलैक। हरिनंदन ठाकुर 'सरोज' एहि बातकेँ गमलनि आ तकरा अपन कथा सभक माध्यमे दूर करबाक प्रयास कयलनि। तत्कालीन समाज स्त्री शिक्षाक उपहास करैत छल जकर गवाह अछि 'शिक्षित कथा'। एहि कथाक ई अंश 'राजेश्वरी नाक भौंह टेढ़ करैत घृणासँ कहलखिन 'दुर बहिना! से की कहै छह, मौगी कतौ पढ़ै, जकरा लाजक छुति नहि से पढ़ैत अछि।' [7] मुदा सरोज स्त्री शिक्षाक महत्वकेँ बुझैत छलाह। तेँ ओकरामे जागरण आनब जरूरी छलनि। से फेर वएह राजेश्वरीकेँ अपन कथामे पढ़ेलनि अछि। जखन ओकरा अपन स्वामीक चिट्ठी अबैत अछि आ ताहिमे लिखल रहैत अछि 'जखन अहाँ अपन हाथे पत्रा लिखब, तखन हम आएब।' [8] आब राजेश्वरी स्वामीक आज्ञा कोना टारि सकैत छलीह! 'राजेश्वरी सिलेट–पिलसिन लऽ कऽ पुतोहु लग गेली।' [9]

एहने सनक कथा अछि 'पढ़ब सीखू'। एहि कथामे अशिक्षिता 'देवकला'क खिस्सा अछि, जे पहिने स्पष्टतः कहैत अछि 'गे दाइ! ई तऽ कोनो युगमे नहि सुनलियै जे स्त्रीगण पुरुखे जकाँ पढ़ै–लिखै।' [10] लेकिन जखन ओहि देवकलाकेँ स्वामीक पत्रा अबैत अछि आ ओकरा पढ़ेबाक लेल सचनू लग जाइत अछि आ जखन सचनू पढ़ैत छैक तखन ओ लाजे कठौत भऽ जाइत अछि। चिट्ठीमे लिखल रहैत अछि 'प्रिये, अहाँ अपने हाथे हमरा चिट्ठी लिखब तखने हम आएब।' आ एहि बात ओकरा ततेक अपगरानि लगलै जे देवकला पढ़ब–लीखब सीखऽ लगैत अछि।

'शिक्षिता' कथाक 'राजेश्वरी' आ 'पढ़ब सिखू' कथाक 'देवकला'क सोच बुच्ची दाइक चुप्पी पर भारी पड़ैत अछि।

तत्कालीन मिथिला समाजमे पसरल अन्धविश्वास पर सेहो सरोजक कथा सभ प्रहार करैत अछि। हमरा जनैत समूचा देशमे मिथिले एकटा एहन प्रदेश अछि जतुका लोक सभसँ बेसी तीर्थाटन करैत अछि, से एखनो अछिए। विशेष कऽ महिला वर्ग। सरोजक समयमे तऽ ई तीर्थाटन चरमोत्कर्ष पर छल। मेलामे जयबे करतीह, गंगा स्नान करबे करतीह, से चाहे जेना हो! 'गंगास्नान' कथामे हास्य–व्यंग्यक माध्यमसँ एकरा देखार कयलनि अछि। जखन कल्याणी, प्रेमरानी, गोसाँइ झा, सिनेहमनि आदि लोक गंगा स्नानक लेल विदा होइत छथि आ टिकट नहि रहबाक कारणे टीटी सभकेँ पकड़ि लैत अछि, ओकरा छोड़बाक लेल गोहारि करैत सिनेहमनि कहैत छथि 'बाबू, हे! ब्राह्मणी छी हम। बड़ धर्म हएत।' डपटैत टिकट मास्टर कहैत अछि 'चुप! बदजात औरत! धरम करने चली है! तुम सब धरम करने नहीं, सैर करने जाती है।' [11] ई लोकनि स्टेशन पर ओकरा सभक व्यंग्य–वाण आ वीभत्स इशारासँ तंग आबि मासुलक डेउढ़ा दऽ ओकरासँ छुटकारा पबैत गेलीह। ओहि समयमे अंधविश्वास कतेक छल से एहि वाक्यसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि

'गाम परसँ जखन गंगाजीक नाम लऽ कऽ विदा भेलहुँ तखन ओना घर कोना जाएब, जखन ग्रहण लगतैक तखन एहि हड़ाहीमे डूब लगा अबै जाएब।' [12]

मिथिलाक आर्थिक स्थिति कतेक विपन्न छल तकर प्रमाण दैत अछि कथा 'गंगा स्नान', 'ललिता', 'दू–चित्रा' आदि। 'ललिता'मे ललिता अपन पतिसँ वेदनाक स्वरमे कहैत अछि 'आइ तीन दिवससँ नेना एक मुट्ठी भात लए कानि रहल अछि।' [13] ई सूनि कामेश्वरक हृदय द्रवित भऽ जाइत अछि। आ ओहो कहैत अछि 'जहाँ कतौसँ अबैत छी की बच्चा लगमे ठाढ़ भऽ कऽ कहऽ लगैत अछि 'बाबू, हमरा लए की अनलहुँ अछि?' तखन हम मर्माहत भऽ जाइत छी।' [14]

तहिना 'गंगास्नान'मे कामिनी कहैत अछि 'समय तेहन टाँट बीतैत अछि जे की कहियह, छिछरी–पतिया उठैत छैक! ककरो वस्तु आँगनमे बाँचल नहि छैक, सभक बंधक राखल छैक।' [15] आर्थिक विपन्नताक संग–संग भयानक आर्थिक असमानता सेहो छलैक। दृष्टांत अछि, कथा 'दू चित्रा'क ई अंश 'आइ पाबनि–तिहारके कोना भूखल रहब! केवल अपने दुनू बेकती रहितहुँ तऽ पेटकुनियाँ दऽ काल कटितहुँ, किन्तु ई ठुठ भरिक नेना फगुआक दिन कोना भूखल रहत? एक दिस एकटा बालक भूख–भूख चीत्कार कऽ रहल अछि आ ओम्हर बाबू–भैयाक कर्कश कंठसँ 'होरी है'क तुमुल प्रतिध्वनि।' एहि कथाक माध्यमसँ तहिया जे बात 'सरोज' उठेलनि कि आइयो ओहिसँ मिथिला उबरि सकल अछि? प्रश्नवाचक चिन्ह आइयो ओतहि ठाढ़े अछि।

आइ समूचा विश्व साहित्यमे दू टा विमर्श जोर पकड़ने अछि स्त्री विमर्श आ दलित विमर्श। मुदा मैथिली कथा साहित्यमे बीसम शताब्दीक पूर्वार्द्धहिमे ई बात कहल जा चुकल अछि। सरोजक दू गोट कथाक एतऽ हम वर्णन करब जाहिमे उक्त दुनूक प्रति ई चिन्ता व्यक्त कयने छथि। दलित विमर्शक कथा अछि 'पक्षी महासम्मेलन'। जे कि अपूर्ण कथा अछि। मुदा जे अंश उपलब्ध अछि ओ अपन बात कहबाक लेल पर्याप्त अछि। एहि कथामे पक्षीकेँ केन्द्रमे राखि मनुष्यकेँ छुआछूत हटेबाक आग्रह करैत छथि। कथामे पक्षी द्वारा कहल गेल बात पर ध्यान देल जाए एहि कथामे पक्षी दू भागमे विभक्त अछि उच्च वर्ग आ अछूत वर्ग। उच्च वर्गमे अबैत अछि कोकिल, सुग्गा, मयूर, हंस आ अस्पृस्य वर्गमे अबैत अछि कौआ, गिद्ध, चिल्ह आदि। एहि महाअधिवेशनमे कौआ कहैत अछि 'आब ओ समय नहि अछि जे पूर्वमे छल। एहि उन्नत युगमे सभ अपन–अपन जाति आ समाजक सुधार कऽ रहल अछि। हमर जाति किएक अस्पृश्य मानल जाइत अछि!' ओ अपन अधिकारक लेल स्पष्ट कहैत अछि 'जखन हम नीक काज करैत छी तखन उच्च किएक ने होएब।' ओतहि जटायु कहैत छथि 'जखन लोक चंडालक कार्यकलापसँ चांडाल भऽ सकैत अछि तखन ब्राह्मणक कार्य कयलासँ लोक ब्राह्मण किएक ने भऽ सकैछ!' ई कथा पढ़बा काल हमरा 'छुतहर' कविता मोन पड़ि रहल छल। तहिना स्त्री विमर्शक महत्वपूर्ण कथा अछि 'अगिलेसुआ'। ओहि समयमे स्त्रीक खरीद–फरोख्तक धंधा खूब चलि रहल छल। अपनो समाजक लोक ई काज करैत छलाह। अपनोकेँ दोसरक हाथे बेचि दैत छलाह। 'अगिलेसुआ' कथामे केदार यमुनाकेँ वैद्यनाथ धाम तीर्थ करबाक नाम पर लऽ जाइत अछि आ ओकरा एकटा पंजाबी हाथे बेचि दैत अछि। जखन ओ पंजाबी यमुनाकेँ अपना संग चलबाक लेल कहैत अछि तखन यमुना दृढ़ भऽ कऽ कहैत अछि 'ओ हमर के जकरा बेचने हम बेचा जाएब!' पंजाबी ओकरा जबर्दश्ती लऽ कऽ चलि जाइत अछि। जाहि कोठी पर एकरा लऽ जाइत

अछि ओतऽ पहिनहिसँ कएकटा स्त्री छलि, जकरा कियो ने कियो अपनहि लोक बेचने छल। ओहीमे अछि जहानवी, जकरा अपन लोक अगिलेसुआ बेचि देने अछि। यमुना आ जहानवी ओकरा सभसँ नजरि बचा भागिकऽ यमुनामे कुदि जाइत अछि, जाहिमेसँ ओकरा सिपाही बचा लैत छैक आ लऽ कऽ थाना चलि जाइत अछि। बीसम शताब्दीमे एतेक साहसी स्त्री आजुक स्त्री विमर्शकेँ झूठ साबित कऽ दैत अछि।

स्त्री विमर्शक सभसँ सशक्त कथा अछि 'मधुर मिलन'। 1930 ई. मे जाहि मिथिलाक स्त्री अशिक्षित होइत छलि, जाहि समाजमे पुरुषोकेँ समुद्र नाँघब पाप छलैक, अपराध छलैक ताहि समयमे स्त्रीक प्रति सरोजक सोच एतेक व्यापक छलनि जे 'मधुर मिलन' कथामे कथा नायिका सरोजनीकेँ पढ़बैत छथि। पढ़बिते नहि छथि अपितु उच्च शिक्षाक लेल विदेश पठबैत छथि। देखल जाए ई अंश

'हम उत्सुकताक संग ई प्रश्न कएल 'सरोजनी, अहाँ बिलायत जाइत छी?'

सरोजनी हँ।' [16]

ओतबे नहि, अपन अधिकारक प्रति स्त्रीकेँ जे स्वर सरोज देलनि अछि से तत्कालीन कोनो साहित्यकार नहि देलनि अछि। एहि कथामे कथा नायक प्रमदाक बाप नहि, माय बिलायत पठबैत अछि पढ़बाक लेल। आ जखन ओ बैरिस्ट्री पढ़िकऽ अबैत अछि तऽ पिता स्पष्ट शब्दमे कहैत छथि 'खबरदार, अहाँ आँगनमे पएर नहि देब, आँगन हमर थिक।' एकर प्रतिक्रियामे प्रमदाक माय कहैत छथि 'आँगन हमरो थिक, आधा आँगनमे टाट लगा लिअ।' ई छल कथाकारक स्त्री विमर्शक दूरदर्शिता।

ओना कएकटा कथामे कथा नायिका आत्महत्या कऽ लैत अछि, जे कथा सभकेँ कमजोर करैत अछि। ओना तकर पाछू छल समाजक आदर्शवादिता आ ताहिसँ सरोज कोना अछूत रहितथि। चूंकि मैथिलीक आरम्भिक जतेक कथा अछि ओ सभ संस्कृतक विद्वान द्वारा लिखल गेल अछि। तकर छाप सेहो कथा सभ पर देखाइत अछि। तकर कारण छल जे अंग्रेजी पढ़ल–लिखल जे विद्वान छलाह ओ मैथिलीकेँ निकृष्ट मानैत छलाह तेँ चाहे तऽ अंग्रेजीमे लिखलनि नहि तऽ हिन्दीमे।

ओना हम स्पष्टतः कहि सकैत छी जे, जे स्थान आधुनिक मैथिली कवितामे राजकमलक अछि, जे स्थान आधुनिक नाटकमे जीवन झाक अछि, जे स्थान उपन्यासमे हरिमोहन झाक अछि, वएह स्थान आधुनिक मैथिली कथा साहित्यक इतिहासमे सरोजक अछि।

'अगिलेसुआ' कथा–संग्रहक भूमिकामे रमानन्द झा 'रमण' ठीके कहने छथि 'जँ हरिनंदन ठाकुरक कथा पर शोघ कएल जाय तँ मैथिली कथा साहित्यक इतिहास बदलि जाएत।'

सन्दर्भ संकेतः

1. 44
2. 45
3. 48
4. 49
5. 90
6. 90
7. 67
8. 68
9. 69
10. 91
11. 44
12. 42
13. 86
14. 56
15. 40
16. 31